

## पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण यानी ऐसा आवरण जो हमें चारों तरफ से ढँक कर रखता है, जो हमसे जुड़ा है और हम उससे जुड़े हैं और हम चाहें तो भी खुद को इससे अलग नहीं कर सकते हैं। प्रकृति और पर्यावरण एक दूसरे का अभिन्न हिस्सा हैं।

कोई भी व्यक्ति या वस्तु चाहे वो सजीव हो या निर्जीव, पर्यावरण के अन्तर्गत ही आती है। पर्यावरण से हमें बहुत कुछ मिलता है, लेकिन बदले में हम क्या करते हैं? हम अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इस पर्यावरण और इसकी अमूल्य संपदा का हनन करने पर तुले हैं।

हमारे द्वारा की गई हर अच्छी और बुरी गतिविधि का असर पर्यावरण पर पड़ता है। इस प्रकृति पर मानव ही सबसे अधिक बुद्धिशील प्राणी माना जाता है। अतः पर्यावरण के संरक्षण की जिम्मेदारी भी मनुष्य की ही है। आज हम पर्यावरण संरक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालकर समाज को इसके लिए जागृत करना चाहते हैं।

### पर्यावरण

पर्यावरण अर्थात् जिस वातावरण में हम रहते हैं। हमारे आस पास मौजूद हर एक चीज, जीव-जंतु, पक्षी, पेड़-पौधे, व्यक्ति इत्यादि सभी से मिलकर पर्यावरण की रचना होती है। हमारा इस पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है और हमेशा रहेगा। प्रकृति और पर्यावरण की अद्भुत सुंदरता देखते ही हृदय में खुशी और उत्साह का संचार होने लगता है।

हरे भरे लहलहाते पेड़, आसमान में कलरव करते और चहचहाते पक्षी, जंगल में दौड़ते जीव जंतु, समुद्र में आती और जाती हुई लहरें, कल कल करके बहती हुई नदियां आदि जो मनोरम अहसास करवाते हैं, वो हमें अन्य कहीं से महसूस नहीं हो सकता।

फिर भी ये अफ़सोस की बात है कि लोग आज भी इसके महत्व को समझ नहीं पाए हैं और इसे नुकसान पहुंचाते रहते हैं। वे यह नहीं जान पा रहे कि पर्यावरण की हानि करके वे अपने सर्वनाश को निमंत्रण दे रहे हैं।

आज मानव नए नए आविष्कार कर रहा है और खूब तरक्की कर रहा है, परन्तु उसका हर्जाना भुगत रहा है ये पर्यावरण और इसमें रहने वाले अबोध जीव। आज सभी को पर्यावरण और प्रकृति का संरक्षण

करने के लिए जागरूक होना पड़ेगा, अन्यथा पर्यावरण के साथ सारी मानव जाति का भी विनाश हो जाएगा।

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता क्यों?

पर्यावरण ने मानव को अनंत काल से संसाधन प्रदान किए और मानव ने भी उनका भरपूर उपयोग किया। प्राचीन काल से लेकर अब तक जिस भी वस्तु की जरूरत हमें महसूस हुई, वो पर्यावरण से ही प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमें हासिल हुई है।

जैसे जैसे समय बीतता गया हमारी जरूरतें भी बढ़ती गई और इन जरूरतों को पूरा करने के लिए हम पर्यावरण के प्रति निर्दयता दिखाने लगे। हमने जनसंख्या वृद्धि पर पहले से रोक नहीं लगाई, जिससे लोगों को संसाधन कम पड़ने लगे और अत्यधिक रूप से ( अति + अधिक = अत्यधिक ) पर्यावरण का विनाश होने लगा।

गांवों से लोग शहरों की ओर पलायन करने लगे, पेड़ पौधों और वनों का विनाश होने लगा, जीव जंतुओं को अपने फायदे के लिए मारा जाने लगा, हर तरफ प्रदूषण फैल गया। जिससे पर्यावरण को बहुत नुकसान पहुंचा।

जिस प्रकृति ने हमें आश्रय दिया उसी को नष्ट करने पर तुल गए हम लोग और प्रकृति का संतुलन बिगड़ता चला गया। पर्यावरण प्रदूषण के बहुत से दुष्प्रभाव हैं जैसे अणु विस्फोट से रेडियोधर्मी पदार्थ निकलने से आनुवांशिक प्रभाव, ओजोन परत जो पराबैंगनी किरणों से रक्षा करती है उसका क्षरण, भूमि का कटाव, अत्यधिक ताप वृद्धि, हवा – पानी – परिवेश प्रदूषित होना, पेड़ पौधों का विनाश, नए नए रोग उत्पन्न होना इत्यादि कई बुरे प्रभाव हैं।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व

प्राचीन काल से ही पर्यावरण का बहुत महत्व रहा है, वास्तव में प्रकृति का संरक्षण ही उसका पूजन है। हमारे भारत में पर्वत, नदियां, वायु, आग, ग्रह नक्षत्र, पेड़ पौधे आदि सभी से मानवीय संबंध जोड़े गए हैं।

वृक्षों को संतान स्वरूप और नदियों को मां स्वरूप माना गया है। हमारे ऋषि मुनियों को ज्ञात था कि मानव स्वभाव कैसा होता है, मानव अपने लालच में किसी भी हद तक जा सकते हैं। इसलिए उन्होंने प्रकृति के साथ मानवीय संबंधों को विकसित किया।

वे जानते थे कि पर्यावरण ही पृथ्वी पर जीवन का आधार है। अतः उन्होंने अपने ग्रंथों में प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण की ही बात कही। वेदों में भी कहा गया है –

‘ॐ पूर्णभद्रः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥’

अर्थात् हमें प्रकृति से उतना ही ग्रहण करना चाहिए, जितना कि आवश्यक है। प्रकृति को पूर्णता से नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। हमारी माता और दादी इसी भावना से बिना पौधों को नुकसान पहुंचाए तुलसी की पत्तियाँ तोड़ती हैं। कुछ ऐसा ही संदेश वेदों में भी दिया गया है।

आज कोई भी पर्यावरण के संरक्षण का महत्व नहीं समझ रहा है। निरंतर प्रदूषण बढ़ता जा रहा है, जिससे सारी पृथ्वी प्रदूषित हो रही है और मानव सभ्यता का अंत होने को है। इन परिस्थितियों को देखते हुए सन् 1992 में ब्राजील में पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

जिसमें 174 देश शामिल हुए। उसके बाद जोहान्सबर्ग में भी सन् 2002 में पृथ्वी सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसके अन्तर्गत सारे देशों को पर्यावरण संरक्षण करने के लिए उपाय समझाए गए।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

पर्यावरण संरक्षण के लिए हमें सर्वप्रथम इस धरती को प्रदूषण रहित करना होगा। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रदूषण भी बढ़ता ही जा रहा है, जिसे नियंत्रण में लाना आवश्यक है तभी हमारे पर्यावरण का संरक्षण हो पाएगा।

मनुष्य दिन प्रतिदिन प्रगति करता जा रहा है और इस विकास के नाम पर प्रदूषण वृद्धि करता जा रहा है। ओजोन परत का क्षरण होने से धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है और ध्रुवों पर ग्लेशियर पिघल रहे हैं। अतः पर्यावरण संरक्षण हमारी नैतिक जिम्मेदारी बन जाता है।

सन् 1986 में भारत की संसद ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक अधिनियम बनाया जिसे पर्यावरण संरक्षण अधिनियम कहते हैं। जब मध्यप्रदेश स्थित भोपाल में गैस लीक की दुर्घटना हुई थी, तब इसे पारित किया गया था।

यह बहुत बड़ी औद्योगिक दुर्घटना थी, जिसमें करीब 2,259 लोग वहीं मारे गए और 500,000 से ज्यादा व्यक्ति मिथाइल आइसोसाइनेट नामक गैस की चपेट में आ गए थे। पर्यावरण संरक्षण

अधिनियम के तहत पर्यावरण की सुरक्षा की ओर ध्यान देना, प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के बारे में सोचना और पर्यावरण में सुधार लाने हेतु कानून बनाया था।

पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करने होंगे। इसे रोकने के लिए निम्न उपाय किए जा सकते हैं।

- फैक्ट्री और घरों से निकलने वाला गंदा पानी जो नदियों और समुद्र में निष्कासित किया जाता है उसे रोकना होगा। क्योंकि यही पानी पीने में, खेती बाड़ी में और दूसरे कार्यों में उपयोग में लाया जाता है। जिसके प्रदूषित होने से उपजाऊ ज़मीन भी धीरे धीरे बंजर हो जाती है और उस जमीन पर भी खाद्य पदार्थ उगाए जाते हैं, वह भी खाने पर शरीर को नुकसान पहुंचाते हैं।
- वायु प्रदूषण से भी निरंतर पर्यावरण दूषित ही हो रहा है। हमें वायु प्रदूषण पर नियंत्रण करने के लिए घर में उपयोग लाए जाने वाले लेटेक्स पेंट का प्रयोग बंद करना होगा।

## निष्कर्ष

पर्यावरण को सुरक्षित रखना उतना ही जरूरी है जितना हम अपने आप को रखते हैं। पर्यावरण से ही हमें वो सभी चीजें उपलब्ध होती हैं, जिसका इस्तेमाल करके आज मानव जीवित है और आराम और सुखदायी जीवन व्यतीत कर रहा है।

पर्यावरण संरक्षण हमारा फर्ज है और इस जिम्मेदारी को हम सबको मिल कर निभाना चाहिए। हमें जितना हो सके उतना पर्यावरण को दूषित होने से बचाना चाहिए और प्रदूषण को रोकने के उपायों को अमल में लाना चाहिए।

[link](#)

महत्वपूर्ण शब्द :

अभिन्न हिस्सा	
---------------	--

सजीव	
निर्जीव	
स्वार्थ सिद्धि के लिए	
अमूल्य संपदा	
हनन	
गतिविधि	
जागृत	
प्रकाश डालकर	
घनिष्ठ संबंध	
अद्भुत	
उत्साह का संचार	
अहसास करवाते हैं,	
मनोरम	
अफ़सोस की बात	

सर्वनाश को निमंत्रण दे रहे हैं।	
नए नए आविष्कार	
हर्जाना भुगत रहा है ।	
अबोध जीव	
प्रकृति का संरक्षण	
मानव जाति का भी विनाश	
अनंत काल से	
संसाधन	
भरपूर उपयोग	
प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप	
निर्दयता	
जनसंख्या वृद्धि	
अत्यधिक	

नष्ट करने पर तुल गए हम लोग	
दुष्प्रभाव	
रेडियोधर्मी	
आनुवांशिक	
पराबैंगनी किरणों	
भूमि का कटाव	
अत्यधिक ताप वृद्धि	
परिवेश प्रदूषित होना	
पेड़ पौधों का विनाश	
मानवीय संबंध	
संतान स्वरूप ( के समान )	
माँ स्वरूप	
किसी भी हद तक	

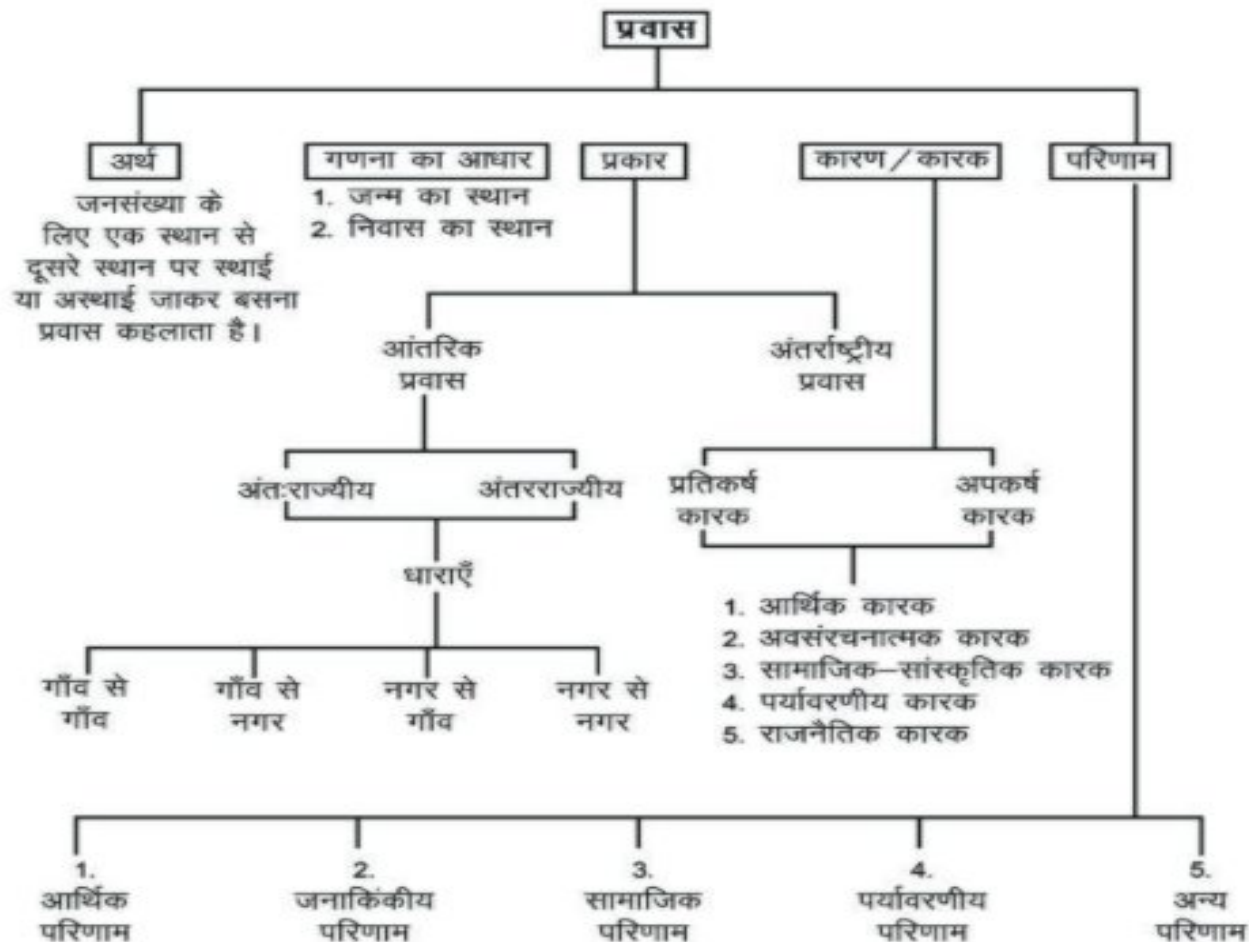
विकसित किया।	
ग्रहण करना चाहिए	
पूर्णता से ( पूरी तरह से )	
निरंतर	
मानव सभ्यता	
सर्वप्रथम	
नियंत्रण में लाना	
दिन प्रतिदिन - हर रोज़	
ग्लेशियर - हिम खंड	
नैतिक जिम्मेदारी	
पारित किया गया - अनुमति दी गई	
औद्योगिक	
दुर्घटना	



प्राकृतिक आपदाओं	
प्रयास	
निष्कासित किया जाता है	
उपजाऊ ज़मीन X बंजर ज़मीन	
खाद्य पदार्थ - खाने के लायक सामान	
वायु प्रदूषण	
उपलब्ध	
इस्तेमाल	
सुखदायी जीवन	

A stylized illustration of a globe. The globe is tilted, showing the Americas on the left and Europe/Africa on the right. The landmasses are a light tan color, and the oceans are a bright blue. Overlaid on the globe is a large American flag, with its stars and stripes clearly visible. To the right of the flag, a large, dense crowd of small, red, stylized human figures is gathered, appearing to march or stand in formation across the globe's surface. The overall image has a slightly pixelated or low-resolution aesthetic.

प्रवास



प्रवास किसे कहते हैं ???

जो लोग जो अपने जन्म स्थान को छोड़कर  
अन्यत्र ( किसी और देश / राज्य ) बस जाते हैं,  
उन्हें प्रवासी कहते हैं ।

# प्रवास से जुड़े कुछ शब्द

Migration - immigration - emigration : प्रवास या प्रवासन

migrants : प्रवासी

Population : जनसंख्या या आबादी

Internal migration : आंतरिक प्रवास

International migration : अंतर्राष्ट्रीय प्रवास

प्रतिकर्ष : ( push factors )

अपकर्ष : ( pull factors )

## प्रवासी और अप्रवासी शब्द के बीच अंतर:

प्रवासी का मतलब है प्रवास करने वाला, इसका प्रयोग उन लोगों के लिये किया जाता है जो कि रहते विदेश में हैं परंतु वहाँ के नागरिक नहीं हैं। प्रवासी का अर्थ वह जो अपनी जन्मभूमि छोड़कर कहीं और बसता है। जैसे बंगाली बंगाल में रहते हैं लेकिन यदि कोई बंगाली दिल्ली या इंदौर में रह रहा हो तो वह प्रवासी बंगाली हो गया। इसी तरह कोई भारतीय भारत छोड़ किसी और देश में रहता है तो वह प्रवासी भारतीय हो गया।

## अप्रवासी

हर व्यक्ति जो अपना देश छोड़कर किसी और देश में जाता है तो वह अपने देश के लिए हुआ emigrant (प्रवासी) और उस नए देश के लिए हुआ immigrant (अप्रवासी)। यानी हर भारतीय जो हमारा देश छोड़कर किसी और देश जैसे अमेरिका या ब्रिटन में जाता है, वह हमारे लिए हुआ प्रवासी और अमेरिका और ब्रिटेन के लिए हुआ अप्रवासी।

शरणार्थी कौन है?

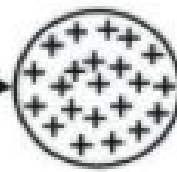
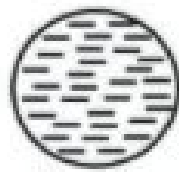
एक शरणार्थी वह है जो युद्ध, हिंसा या उत्पीड़न और आमतौर पर बिना चेतावनी के अपने देश से भागने के लिए मजबूर होता है। एक शरण लेने वाला वह व्यक्ति है जो अपने देश में खतरों से अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा की मांग करता है ।



## प्रवास के प्रकार

१) प्रतिकर्ष कारक : ( push factors ) : प्रतिकर्ष कारक वे कारण हैं जिनके कारण लोगों को अपना जन्म स्थल छोड़ना पड़ता है ।

२) अपकर्ष कारक : ( pull factors ) : अपकर्ष कारक वे कारक हैं जो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं । उन्हें कोई बंधन नहीं होता वे स्वयं ही अपना चुनाव करते हैं ।



**प्रतिकर्ष कारक  
(Push Factor)**

**अपकर्ष कारक  
(Pull Factor)**

- आर्थिक कारक
  - गरीबी
  - कृषि भूमि पर जनसंख्या का अधिक दबाव
  - बेरोजगारी
- अवसंरचनात्मक कारक
  - स्वास्थ्य सेवाओं, शिक्षा सुविधाओं का अभाव
  - अवसंरचनात्मक सुविधाओं की कमी
- प्राकृतिक पर्यावरणीय कारक
  - प्राकृतिक आपदाएँ
- सामाजिक-राजनैतिक कारक
  - युद्ध, अशांति, राजनैतिक अस्थिरता

- रोजगार के बेहतर अवसर
- नियमित काम का मिलना
- ऊँचा वेतन
- शिक्षा के बेहतर अवसर
- बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ
- मनोरंजन के स्रोत
- शांति व स्थायित्व संकेत
- नकारात्मक कारक
- +सकारात्मक कारक

मैं आरिफ़ खान हूँ। मैं अपनी पत्नी और चार बच्चों के साथ गाँव में रहता हूँ। मैं यहाँ 30 रु. प्रतिदिन की दिहाड़ी पर खेतों में काम करता हूँ। यहाँ सभी 30 दिन काम नहीं मिलता। इसके साथ मैंने खेती के लिए पट्टे पर ज़मीन ले रखी है ताकि मैं अपने बच्चों को शिक्षित बना सकूँ। मेरी पत्नी बीमार है और तपेदिक से पीड़ित है। स्वास्थ्य सेवाओं की सुविधा के अभाव और पैसे की कमी के कारण मैं अपनी पत्नी का इलाज कराने में असमर्थ हूँ। प्रचलित परिस्थितियों ने मुझे भ्रमित कर रखा है।



मैं तमिलनाडु तट के मछुआरा समुदाय से सम्बन्ध रखने वाली सुखलक्ष्मी हूँ। विध्वंसकारी सुनामी मेरे दो बच्चों को छोड़कर घर के सभी सदस्यों को बहा ले गई। सब कुछ नष्ट हो गया है। तब से मैं चेन्नई की गन्दी बस्ती में रह रही हूँ। मैं यहाँ एक धरेलू नौकरानी की तरह काम करती हूँ और मेरे बच्चे स्कूल जाते हैं तथा खाली समय में चिथड़े चुगने में मेरी मदद करते हैं। फिर भी मैं अपनी जगह को याद करती हूँ पर मैं वापिस नहीं जाऊँगी। उन राक्षसी तरंगों को मैं भुला नहीं सकती। मुझे अपने बच्चों का बचाव करना है।



मैं मोहन सिंह हूँ, लुधियाना में बिनाई वस्त्रों की फैक्टरी में काम करता हूँ। वहाँ मैं प्रतिदिन 8 घंटे काम करके 2000 रु. महीना लेता हूँ। मेरे पास समयोपरि (Overtime) से अतिरिक्त धन कमाने का अवसर है। यहाँ चिकित्सीय, शैक्षिक और मनोरंजनात्मक सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। फिर भी परिवार के सदस्यों और बच्चों की अनुपस्थिति व्यग्रता पैदा करती है। नौकरियों के अनेक अवसर हैं।



मैं मनीष गवारकर भंडारा से विज्ञान स्नातक हूँ। यहाँ मुंबई में मैं अपनी स्नातकोत्तर के साथ-साथ अंशकालिक नौकरी भी कर रहा हूँ। फिर भी यहाँ रहने की लागत अधिक है और लोगों को दूसरों के लिए फुरसत नहीं है। मैं मुंबई आया क्योंकि यह मेरा सपना था। यह नगर उच्च वेतन और बाहर जाने के बहुत सारे अवसर प्रदान करता है।

# विभिन्न कारक

यातनाभरा जीवन

किफ़ायती घर और सुविधाएँ

सरकारी उत्पीड़न

बेरोज़गारी

अच्छी आर्थिक सम्भावनाएँ

अनुकूल मौसम / जलवायु

युद्ध या सामाजिक अशांति

ख़राब शैक्षिक ढाँचा

सुरक्षित सड़कें

अच्छा विद्यालय तथा अस्पताल

ग़रीबी

रोज़गार के अवसर उपलब्ध ना होना

भ्रष्टाचार

परिवार तथा परिजनों की उपस्थिति

मनोरंजन के साधन

दिए गए कथनों को पढ़कर बताइए कि ये किस वर्ग में

आएँगे

प्रतिकर्ष कारक

अपकर्ष कारक

कल्पना कीजिए कि आप एक नए देश में जा रहे हैं। आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या होगा ? प्राथमिकताओं के अनुसार सूची बनाइए ।

१- सिनेमा / थिएटर / कॉन्सर्ट हॉल

२- अच्छे फ्लैट / मकान

३- अच्छी परिवहन व्यवस्था

३- अच्छे स्कूल / अस्पताल / विश्वविद्यालय

४- परिवार / दोस्तों की उपस्थिति

५- सुरक्षित सड़कें

६- बगीचे तथा हरियाली

७-मीडिया की मुफ्त सेवाएँ

८-लोकतांत्रिक प्रणाली / समानता

९-भाषा

१०-संस्कृति

११- या फिर कुछ और ?????

इनमें से कौन सी चीज़ आपको सबसे ज्यादा पसंद आएगी जिसके लिए आप अपना घर / शहर या देश छोड़ना चाहेंगे ?

बेरोज़गारी

ग़रीबी

प्राकृतिक आपदाएँ

युद्ध तथा असुरक्षित समाज

ख़राब घर या संरचना

नए अवसरों की कमी

सरकारी उत्पीड़न

जलवायु

भौगोलिक स्थिति

प्रवास के कारण :

लोग सामान्य रूप से अपने जन्म स्थान से भावात्मक रूप से जुड़े होते हैं किंतु लाखों लोग अपने जन्म के स्थान और निवास को छोड़ देते हैं , इसके विविध कारण हो सकते हैं ।



## आर्थिक कारण :

ग्रामीण इलाकों में ज़्यादातर लोग खेती करते हैं और उसी पर निर्भर होते हैं। खेती की भूमि सीमित होती है और पूरा किसान परिवार उसी पर आश्रित होता है। रोज़गार के और अवसर पाने के लिए लोग अपना गाँव छोड़ते हैं।

## अवसंरचनात्मक कारक : ( Bad infrastructure )

ऐसे कई देश तथा राज्य होते हैं जहाँ उच्च शिक्षा , स्वास्थ्य सेवाओं , परिवहन , मनोरंजन तथा आवश्यक सुविधाओं की कमी लोगों को मजबूर करती है कि वे अपना जन्म स्थल छोड़ें और नए स्थान पर जाएँ ।

## सामाजिक - सांस्कृतिक कारक

कई समाज में ऐसी प्रथाएँ तथा परम्पराएँ होती हैं जो व्यक्ति की सोच से मेल नहीं खाती हैं। कई बार ये परम्पराएँ व्यक्ति के विकास में बाधक बनती हैं या कई बार अंधविश्वास से भरी होती हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति ना चाहते हुए भी अपना देश त्याग देता है।

## राजनैतिक कारक : ( Political reasons )

युद्ध , अशांति , स्थानीय संघर्ष , राजनैतिक अस्थिरता , जातीय या धार्मिक दंगों के चलते सुरक्षा की कमी के कारण लोग अपने घरों को छोड़कर अन्य सुरक्षित स्थानों की ओर प्रवास करते हैं ।  
उदाहरण के लिए आतंकवाद के कारण कश्मीर घाटी से कश्मीरी पंडितों को मजबूरन देश के अन्य भागों में प्रवास कर जाना ।

प्राकृतिक / पर्यावरणीय कारक :

प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ , भूकम्प , सूनामी , चक्रवात ,  
सूखा

इत्यादि के घटित होने के कारण प्रभावित क्षेत्रों से लोग  
अन्य सुरक्षित स्थानों की ओर प्रवास कर जाते हैं ।

# अनौपचारिक पत्र

पता - २०३, कैलाश टॉवर ,

मुंबई - ४००१०१ ।

दिनांक - २ सितम्बर , २०२१ ।

प्रिय मित्र ----- ,

सप्रेम नमस्कार ।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और छोटी तनु को बहुत सारा प्यार ।

तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी ।

अपना खूयाल रखना ।

तुम्हारा मित्र ,

संदर्भ :

<https://hindi.aglasem.com/class-12-geography-notes-manufacturing-industries/>

<https://s3.ap-south-1.amazonaws.com/aglasem-cdn/aglasem-doc/5eef2ade-ac57-11e9-8644-02f21f5619c4/10.jpg>

[भारत और प्रवासी भारतीय पर निबन्ध |Essay on India and Emigrant Indian in Hindi](#)

[https://nroer.gov.in/home/topic\\_details/568a464981fccb15e0f751ed](https://nroer.gov.in/home/topic_details/568a464981fccb15e0f751ed)

[clip picture](#)

## शब्दावली १- प्रकृति रक्षा

प्रकृति - निसर्ग -	घनिष्ठ - बहुत पास	धरती - पृथ्वी , धरा	तापमान - तापक्रम temperature
पर्यावरण - environment	सौंदर्य - सुंदरता beauty	प्रदूषण - pollution	वैश्वीकरण - globalization
अभिन्न - जो अलग ना हो / एक ही तरह का हो integral	सर्वनाश -पूरी तरह से खात्मा	प्रदूषित - polluted	सतत - sustainable
अमूल्य - जिसका कोई मूल्य ना हो	आविष्कार - खोज	आवश्यक - ज़रूरी	वैश्विक तापमान - global warming
संपदा - संपत्ति , धन	तरक्की - विकास /प्रगति	औद्योगीकरण - industrialization	ग्रह - planet
बुद्धिशील - बुद्धिमान - intelligent	अन्यथा - नहीं तो otherwise	तकनीकीकरण Technicalization	मानवीय -human
संरक्षण -सुरक्षा	के कारण - के परिणामस्वरूप / के	मशीनीकरण - Mechanization	माहौल - परिवेश



	फलस्वरूप		
मस्तिष्क - दिमाग	नज़रंदाज़ - उपेक्षा	वातानुकूलक - ठंड दायक - Air conditioner	सुविधाएँ - facilities
जीवनशैली - जीवन चर्या	परीक्षण - जाँच	भुगतान - अदायगी -payment	ज़हरीली - विषैली poisoning
चपेट में आना - शिकार होना	क्रहर बरपाना - विनाश करना	समझबूझ - समझदारी	परिणाम -नतीजा
अप्रत्यक्ष - indirect	प्रत्यक्ष direct	परोपकार - दूसरों पर उपकार	मनोरम दृश्य - सुंदर दृश्य
दस्तक देना - सूचना देना	वनाश्रित - जंगलों पर आश्रित	बाढ़ - सैलाब	सूखा -अकाल
संतुलन - तालमेल बिठाना	प्रवृत्ति -स्वभाव	ग्रामीण जीवन	शहरी जीवन
अनुमति - आज्ञा	वृक्षारोपण - वृक्ष लगाना	परम्परा - प्रथा	आपातकाल - संकट का समय



जीवन में त्योहारों का महत्व

<https://www.youtube.com/watch?v=sc9eGoZRqdk>

मानव जीवन अनेक विविधताओं से भरा हुआ है। अपने जीवनकाल में उसे अनेक प्रकार के कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। इनमें वह प्रायः इतना अधिक व्यस्त हो जाता है कि अपनी व्यस्त जिंदगी से स्वयं के मनोरंजन आदि के लिए समय निकालना भी कठिन हो जाता है।

इन परिस्थितियों में त्योहार उसके जीवन में सुखद परिवर्तन लाते हैं तथा उसमें हर्षोल्लास व नवीनता का संचार करते हैं। त्योहार अथवा पर्व सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं व पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक समुदाय, जाति व धर्म की मान्यताएँ होती हैं उसी प्रकार इन त्योहारों को मनाने की विधियों में भिन्नता होती है।

सभी त्योहारों की अपनी परंपरा होती है जिससे संबंधित जन-समुदाय इनमें एक साथ भाग लेता है। सभी जन त्योहार के आगमन से प्रसन्नचित्त होते हैं व विधि-विधान से, पूर्ण हर्षोल्लास के साथ इन त्योहारों में भाग लेते हैं।

प्रत्येक त्योहार में अपनी विधि व परंपरा के साथ समाज, देश व राष्ट्र के लिए कोई न कोई विशेष संदेश निहित होता है। भारत में **विजयादशमी** का पर्व जिस प्रकार **असत्य पर सत्य** की तथा **अधर्म पर धर्म** की विजय का संदेश देता है उसी प्रकार रक्षाबंधन का **पावन पर्व** भाई-बहन के पवित्र प्रेम और भाई का बहन की आजीवन रक्षा करने के संकल्प को याद कराता है। इसी प्रकार रंगों का त्योहार होली हमें संदेश देता है कि हम आपसी **कटुता व वैमनस्य** को भुलाकर अपने शत्रुओं से भी प्रेम करें।

ईसाइयों का त्योहार क्रिसमस संसार से पाप के अंधकार को दूर करने का संदेश देता है तो मुसलमानों की ईद **भाईचारे का संदेश** देती है। इस प्रकार सभी त्योहारों के पीछे **समाजोत्थान** का कोई न कोई **महान उद्देश्य** अवश्य ही निहित होता है। लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं जिससे **आपसी वैमनस्य** घटता है। त्योहारों के अवसर पर दान देने, **सत्कर्म करने की जो परंपरा** है, उससे सामाजिक ताने-बाने को बनाए रखने में मदद मिलती है।

ये त्योहार मनुष्य के जीवन को हर्षोल्लास से भर देते हैं। इन त्योहारों से उसके **जीवन की नीरसता** समाप्त होती है तथा उसमें एक **नवीनता व सरसता का संचार** होता है। त्योहारों के आगमन से पूर्व ही मनुष्य की **उत्कंठा व उत्साह** उसमें एक **सकारात्मक व सुखद परिवर्तन** लाना

प्रारंभ कर देते हैं। वह संपूर्ण आलस्य व नीरसता को त्याग कर पूरे उत्साह के साथ त्योहारों की तैयारी व प्रतीक्षा करता है।

त्योहारों के शुभ अवसर पर निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी नए वस्त्र धारण करते हैं एवं समस्त दुख-अवसादों को भुलाकर त्योहार की खुशियाँ मनाते हैं। त्योहारों के अवसर पर पंडितों, गरीबों तथा अन्य लोगों को दान आदि देकर संतुष्ट करने की प्रथा का भी समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भूखे को भोजन, निर्धनों को वस्त्र आदि बाँटकर लोग सामाजिक समरसता लाने का प्रयास करते हैं।

त्योहार पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। त्योहारों का आनंद और भी अधिक होता है जब परिवार के सभी सदस्य एक साथ त्योहारों में हिस्सा लेते हैं। परिवार के सदस्यों का त्योहार के शुभ अवसर पर एकत्र होने से कार्य की व्यस्तता के कारण जो संवादहीनता या परस्पर दुराव उत्पन्न होता है वह समाप्त हो जाता है। संवेदनाओं व परस्पर मेल आदि से मानवीय भावनाएँ पुनर्जीवित हो उठती हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक संस्कार आदि का बच्चों पर उत्तम प्रभाव पड़ता है।

त्योहारों को समाज के सभी वर्गों के साथ मनाने से सामाजिक एकता में प्रगाढ़ता आती है। इसी प्रकार हमारे कुछ राष्ट्रीय पर्व जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस व गाँधी जयंती को

सभी धर्मों, जातियों व संप्रदायों के लोग मिल-जुल कर खुशी से मनाते हैं ।

इन अवसरों पर सारा राष्ट्र उन महापुरुषों व देशभक्तों को याद करता है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को सहर्ष न्यौछावर कर दिया । इस प्रकार हमारे ये राष्ट्रीय पर्व देश को एक सूत्र में बाँधे रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । दूसरे शब्दों में, हमारे त्योहार राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं । वे भारतीय नागरिकों के मन में देशप्रेम व बंधुत्व का भाव जगाते हैं ।

हमारे त्योहार हमारी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा व भारतीय सभ्यता के प्रतीक हैं । ये त्योहार हमारी संस्कृति की धरोहर हैं । इन पर्वों व त्योहारों के माध्यम से हमारी संस्कृति की वास्तविक पहचान होती है । इस प्रकार हम देखते हैं कि त्योहारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है । ये त्योहार हमारी नीरसता को समाप्त कर उसमें नया उत्साह व खुशी का रस भरते हैं । इसके अतिरिक्त हमारी पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को प्रगाढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं ।

हम सभी भारतीय नागरिकों का यह पुनीत कर्तव्य है कि हम त्योहारों को सादगी व पवित्रता से मनाएं । अपने निजी स्वार्थों से उनकी छवि को धूमिल न करें । उन तत्वों का बहिष्कार करें जो इनकी गरिमा को धूमिल करने की चेष्टा करते हैं ।

त्योहारों को मनाने की विधियों में जो विकृतियाँ आ गई हैं, यथा – मदिरापान, जुआ खेलना, धार्मिक उन्माद उत्पन्न करना, ध्वनि प्रदूषण व वायु प्रदूषण को बढ़ावा देना, उन्हें शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करना होगा । हम त्योहारों को उनकी मूल भावना के साथ मनाएँ ताकि सुख-शांति में वृद्धि हो सके ।

त्योहारों का बढ़ता व्यवसायीकरण /बाज़ारीकरण

आज के भौतिकवादी युग में त्योहारों का रूप-स्वरूप बदल रहा है। त्योहारों में व्यावसायिकता बढ़ती जा रही है।' इस तथ्य की विवेचना कीजिए।

भारत विविध संस्कृतियों, संप्रदायों एवं भाषाओं का देश है। यहाँ अनेक प्रकार के उत्सव और त्योहार मनाए जाते हैं। वसंतोत्सव, होली, वैसाखी, ईद, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, बाल दिवस, दशहरा, दीपावली, ओणम, पोंगल, गुरुपर्व, रक्षाबंधन, बड़ा

दिन (क्रिसमस) आदि अनेक ऐसे त्योहार हैं जिनका संबंध संस्कृति, धर्म, देश या देश के महापुरुषों के साथ है। इन उत्सवों का आयोजन अलग-अलग ढंग से किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में राष्ट्रीय महत्व के त्योहारों को छोड़ दिया जाए तो लगभग सभी त्योहारों का रूप-स्वरूप बदल रहा है। नगरीकरण, व्यवसायीकरण, मशीनीकरण आदि संस्कृतियों ने अपना रंग जमाना शुरू कर दिया है। हमारे परंपरागत त्योहार भी इस प्रकार की पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आते जा रहे हैं। सबसे पहले रक्षाबंधन की बात की जाए। अभी कुछ वर्ष पूर्व यह एक सादा एवं पवित्र त्योहार था। भाई-बहन का रिश्ता दुनिया में सब रिश्तों से ऊपर है। इस रिश्ते को रक्षाबंधन के दिन सूत (धागा) बाँधकर और सुदृढ़ करने की परंपरा निभाई जाती थी। परंतु आज के व्यावसायिक युग में इसका स्वरूप ही बदल गया है।

उत्पादकों, वितरकों, विज्ञापनों तथा केवल टी. वी. के चैनलों के कारण इस पवित्र त्योहार में चकाचौंध, प्रदर्शन और कृत्रिमता का समावेश हो रहा है। जहाँ घर में पड़े एक धागे और गुड़ से काम चल जाता था वहाँ अब एक-दूसरे में बढ़कर खर्च करने की भावना पनप रही है। एक रुपए से लेकर एक लाख तक की राखियाँ बाज़ार में तरह-तरह के वर्ग के लोगों को लुभा रही हैं। सौ रुपए से लेकर दो हजार तक के मूल्य के मिठाई के डिब्बे उपलब्ध हैं।

क्रिसमस, दीपावली, दशहरा, गुरुपर्व आदि उत्सवों को मनाने के ढंग भी बदल चुके हैं। नगरतोरण बनाए जाते हैं, फ्लैक्स बनाकर टाँगे जाते



हैं और झंडे, सजावटी प्रकाश, नगर कीर्तन, शोभा यात्रा, दान-दक्षिणा या लंगर वितरण आदि की बात ही क्या। धनी लोग अपने घरों पर सजावटी प्रकाश करने में हज़ारों-लाखों खर्च कर देते हैं। पटाखों तथा दूसरे प्रकार की आतिशबाजी खर्चीली, भड़कीली और यांत्रिक होती जा रही है। ऐसे त्योहारों पर अरबों खर्च होने लगे हैं। आज दिखावा अधिक होने लगा है। पास धन हो या न हो, प्रदर्शन करना आवश्यक है। लोग उधार लेकर उपहारों का आदान-प्रदान करने लगे हैं। प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी है। नववर्ष, होली, वसंतोत्सव आदि की तो बात ही दूसरी है। पहले हमारे पूर्वज घरों में बने व्यंजनों तथा उपकरणों तक सीमित रहते थे और आनंदपूर्वक इन उत्सवों का आनंद लेते थे। आज वह गई बीती बात हो चुकी है। नववर्ष के संदर्भ में अनेक विज्ञापन पहले ही आने शुरू हो जाते हैं। क्लबों, होटलों, सभाओं, समितियों, आमोद-केद्रों की ओर से अपने-अपने ढंग से नववर्ष की पूर्व-संध्या के कार्यक्रमों की घोषणा होने लगती है। युवावर्ग विशेष रूप से इस संस्कृति की ओर आकृष्ट होता है। पहले लोग अपने घरों में ही ऐसे अवसरों का आनंद लेते और एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते थे। आज ऐसे व्यावसायिक केंद्रों में हज़ार रुपये से लेकर लाख रुपये तक के टिकट से प्रवेश पाने का प्रावधान होता है और सनक से भरे वहाँ जाने से नहीं चूकते। नृत्य, मदिरा आदि का सहारा लेकर ऐसे व्यवसायी लोगों को खूब लूटने लगे हैं। उपहारों, संदेशों, खाद्यानों और व्यंजनों पर खूब पैसा बहाया जाता है।

लोग पदोन्नति के लोभ में अपने अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए अपनी सामर्थ्य से भी बढ़कर उपहार देते हैं। घरों में बच्चों और स्त्रियों की मानसिकता भी बदल रही है। वे भी ऐसे उत्सवों पर नए वस्त्रों, उपकरणों और वाहनों की माँग करने लगी हैं। जन्मदिनों पर मध्यवर्ग का भरसक शोषण होता है। उत्सवों में बढ़ती जा रही इस अंधाधुंध व्यावसायिकता को हम सब ही रोक सकते हैं। यवावर्ग को इसके लिए आगे आना चाहिए। वे ऐसे उपभोक्तावादी दृष्टिकोण पर नियंत्रण पाएँगे, तो ही उनका भविष्य उज्ज्वल हो पाएगा।

<https://www.essaysinhindi.com/festivals/>

जीवन में त्योहारों का महत्व

<https://www.youtube.com/watch?v=sc9eGoZRqdk>

मानव जीवन अनेक विविधताओं से भरा हुआ है। अपने जीवनकाल में उसे अनेक प्रकार के कर्तव्यों व दायित्वों का निर्वाह करना पड़ता है। इनमें वह प्रायः इतना अधिक व्यस्त हो जाता है कि अपनी व्यस्त जिंदगी से स्वयं के मनोरंजन आदि के लिए समय निकालना भी कठिन हो जाता है।

इन परिस्थितियों में त्योहार उसके जीवन में सुखद परिवर्तन लाते हैं तथा उसमें हर्षोल्लास व नवीनता का संचार करते हैं। त्योहार अथवा पर्व सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं व पूर्व संस्कारों पर आधारित होते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक समुदाय, जाति व धर्म की मान्यताएँ होती हैं उसी प्रकार इन त्योहारों को मनाने की विधियों में भिन्नता होती है।

सभी त्योहारों की अपनी परंपरा होती है जिससे संबंधित जन-समुदाय इनमें एक साथ भाग लेता है। सभी जन त्योहार के आगमन से प्रसन्नचित्त होते हैं व विधि-विधान से, पूर्ण हर्षोल्लास के साथ इन त्योहारों में भाग लेते हैं।

प्रत्येक त्योहार में अपनी विधि व परंपरा के साथ समाज, देश व राष्ट्र के लिए कोई न कोई विशेष संदेश निहित होता है। भारत में **विजयादशमी** का पर्व जिस प्रकार **असत्य पर सत्य** की तथा **अधर्म पर धर्म** की विजय का संदेश देता है उसी प्रकार रक्षाबंधन का **पावन पर्व** भाई-बहन के पवित्र प्रेम और भाई का बहन की आजीवन रक्षा करने के संकल्प को याद कराता है। इसी प्रकार रंगों का त्योहार होली हमें संदेश देता है कि हम आपसी **कटुता व वैमनस्य** को भुलाकर अपने शत्रुओं से भी प्रेम करें।

ईसाइयों का त्योहार क्रिसमस संसार से पाप के अंधकार को दूर करने का संदेश देता है तो मुसलमानों की ईद **भाईचारे का संदेश** देती है। इस प्रकार सभी त्योहारों के पीछे **समाजोत्थान** का कोई न कोई **महान उद्देश्य** अवश्य ही निहित होता है। लोग एक-दूसरे के करीब आते हैं जिससे **आपसी वैमनस्य** घटता है। त्योहारों के अवसर पर दान देने, **सत्कर्म करने की जो परंपरा** है, उससे सामाजिक ताने-बाने को बनाए रखने में मदद मिलती है।

ये त्योहार मनुष्य के जीवन को हर्षोल्लास से भर देते हैं। इन त्योहारों से उसके **जीवन की नीरसता** समाप्त होती है तथा उसमें एक **नवीनता व सरसता का संचार** होता है। त्योहारों के आगमन से पूर्व ही मनुष्य की **उत्कंठा व उत्साह** उसमें एक **सकारात्मक व सुखद परिवर्तन** लाना

प्रारंभ कर देते हैं। वह संपूर्ण आलस्य व नीरसता को त्याग कर पूरे उत्साह के साथ त्योहारों की तैयारी व प्रतीक्षा करता है।

त्योहारों के शुभ अवसर पर निर्धन से निर्धन व्यक्ति भी नए वस्त्र धारण करते हैं एवं समस्त दुख-अवसादों को भुलाकर त्योहार की खुशियाँ मनाते हैं। त्योहारों के अवसर पर पंडितों, गरीबों तथा अन्य लोगों को दान आदि देकर संतुष्ट करने की प्रथा का भी समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। भूखे को भोजन, निर्धनों को वस्त्र आदि बाँटकर लोग सामाजिक समरसता लाने का प्रयास करते हैं।

त्योहार पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। त्योहारों का आनंद और भी अधिक होता है जब परिवार के सभी सदस्य एक साथ त्योहारों में हिस्सा लेते हैं। परिवार के सदस्यों का त्योहार के शुभ अवसर पर एकत्र होने से कार्य की व्यस्तता के कारण जो संवादहीनता या परस्पर दुराव उत्पन्न होता है वह समाप्त हो जाता है। संवेदनाओं व परस्पर मेल आदि से मानवीय भावनाएँ पुनर्जीवित हो उठती हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक संस्कार आदि का बच्चों पर उत्तम प्रभाव पड़ता है।

त्योहारों को समाज के सभी वर्गों के साथ मनाने से सामाजिक एकता में प्रगाढ़ता आती है। इसी प्रकार हमारे कुछ राष्ट्रीय पर्व जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस, शिक्षक दिवस व गाँधी जयंती को

सभी धर्मों, जातियों व संप्रदायों के लोग मिल-जुल कर खुशी से मनाते हैं ।

इन अवसरों पर सारा राष्ट्र उन महापुरुषों व देशभक्तों को याद करता है जिन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों को सहर्ष न्यौछावर कर दिया । इस प्रकार हमारे ये राष्ट्रीय पर्व देश को एक सूत्र में बाँधे रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं । दूसरे शब्दों में, हमारे त्योहार राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं । वे भारतीय नागरिकों के मन में देशप्रेम व बंधुत्व का भाव जगाते हैं ।

हमारे त्योहार हमारी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा व भारतीय सभ्यता के प्रतीक हैं । ये त्योहार हमारी संस्कृति की धरोहर हैं । इन पर्वों व त्योहारों के माध्यम से हमारी संस्कृति की वास्तविक पहचान होती है । इस प्रकार हम देखते हैं कि त्योहारों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है । ये त्योहार हमारी नीरसता को समाप्त कर उसमें नया उत्साह व खुशी का रस भरते हैं । इसके अतिरिक्त हमारी पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता को प्रगाढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं ।

हम सभी भारतीय नागरिकों का यह पुनीत कर्तव्य है कि हम त्योहारों को सादगी व पवित्रता से मनाएं । अपने निजी स्वार्थों से उनकी छवि को धूमिल न करें । उन तत्वों का बहिष्कार करें जो इनकी गरिमा को धूमिल करने की चेष्टा करते हैं ।

त्योहारों को मनाने की विधियों में जो विकृतियाँ आ गई हैं, यथा – मदिरापान, जुआ खेलना, धार्मिक उन्माद उत्पन्न करना, ध्वनि प्रदूषण व वायु प्रदूषण को बढ़ावा देना, उन्हें शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करना होगा । हम त्योहारों को उनकी मूल भावना के साथ मनाएँ ताकि सुख-शांति में वृद्धि हो सके ।

त्योहारों का बढ़ता व्यवसायीकरण /बाज़ारीकरण

आज के भौतिकवादी युग में त्योहारों का रूप-स्वरूप बदल रहा है। त्योहारों में व्यावसायिकता बढ़ती जा रही है।' इस तथ्य की विवेचना कीजिए।

भारत विविध संस्कृतियों, संप्रदायों एवं भाषाओं का देश है। यहाँ अनेक प्रकार के उत्सव और त्योहार मनाए जाते हैं। वसंतोत्सव, होली, वैसाखी, ईद, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, बाल दिवस, दशहरा, दीपावली, ओणम, पोंगल, गुरुपर्व, रक्षाबंधन, बड़ा

दिन (क्रिसमस) आदि अनेक ऐसे त्योहार हैं जिनका संबंध संस्कृति, धर्म, देश या देश के महापुरुषों के साथ है। इन उत्सवों का आयोजन अलग-अलग ढंग से किया जाता है। आज के भौतिकवादी युग में राष्ट्रीय महत्त्व के त्योहारों को छोड़ दिया जाए तो लगभग सभी त्योहारों का रूप-स्वरूप बदल रहा है। नगरीकरण, व्यवसायीकरण, मशीनीकरण आदि संस्कृतियों ने अपना रंग जमाना शुरू कर दिया है। हमारे परंपरागत त्योहार भी इस प्रकार की पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में आते जा रहे हैं। सबसे पहले रक्षाबंधन की बात की जाए। अभी कुछ वर्ष पूर्व यह एक सादा एवं पवित्र त्योहार था। भाई-बहन का रिश्ता दुनिया में सब रिश्तों से ऊपर है। इस रिश्ते को रक्षाबंधन के दिन सूत (धागा) बाँधकर और सुदृढ़ करने की परंपरा निभाई जाती थी। परंतु आज के व्यावसायिक युग में इसका स्वरूप ही बदल गया है।

उत्पादकों, वितरकों, विज्ञापनों तथा केवल टी. वी. के चैनलों के कारण इस पवित्र त्योहार में चकाचौंध, प्रदर्शन और कृत्रिमता का समावेश हो रहा है। जहाँ घर में पड़े एक धागे और गुड़ से काम चल जाता था वहाँ अब एक-दूसरे में बढ़कर खर्च करने की भावना पनप रही है। एक रुपए से लेकर एक लाख तक की राखियाँ बाज़ार में तरह-तरह के वर्ग के लोगों को लुभा रही हैं। सौ रुपए से लेकर दो हजार तक के मूल्य के मिठाई के डिब्बे उपलब्ध हैं।

क्रिसमस, दीपावली, दशहरा, गुरुपर्व आदि उत्सवों को मनाने के ढंग भी बदल चुके हैं। नगरतोरण बनाए जाते हैं, फ्लैक्स बनाकर टाँगे जाते



हैं और झंडे, सजावटी प्रकाश, नगर कीर्तन, शोभा यात्रा, दान-दक्षिणा या लंगर वितरण आदि की बात ही क्या। धनी लोग अपने घरों पर सजावटी प्रकाश करने में हज़ारों-लाखों खर्च कर देते हैं। पटाखों तथा दूसरे प्रकार की आतिशबाजी खर्चीली, भड़कीली और यांत्रिक होती जा रही है। ऐसे त्योहारों पर अरबों खर्च होने लगे हैं। आज दिखावा अधिक होने लगा है। पास धन हो या न हो, प्रदर्शन करना आवश्यक है। लोग उधार लेकर उपहारों का आदान-प्रदान करने लगे हैं। प्रतिस्पर्धा बढ़ने लगी है। नववर्ष, होली, वसंतोत्सव आदि की तो बात ही दूसरी है। पहले हमारे पूर्वज घरों में बने व्यंजनों तथा उपकरणों तक सीमित रहते थे और आनंदपूर्वक इन उत्सवों का आनंद लेते थे। आज वह गई बीती बात हो चुकी है। नववर्ष के संदर्भ में अनेक विज्ञापन पहले ही आने शुरू हो जाते हैं। क्लबों, होटलों, सभाओं, समितियों, आमोद-केद्रों की ओर से अपने-अपने ढंग से नववर्ष की पूर्व-संध्या के कार्यक्रमों की घोषणा होने लगती है। युवावर्ग विशेष रूप से इस संस्कृति की ओर आकृष्ट होता है। पहले लोग अपने घरों में ही ऐसे अवसरों का आनंद लेते और एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते थे। आज ऐसे व्यावसायिक केंद्रों में हज़ार रुपये से लेकर लाख रुपये तक के टिकट से प्रवेश पाने का प्रावधान होता है और सनक से भरे वहाँ जाने से नहीं चूकते। नृत्य, मदिरा आदि का सहारा लेकर ऐसे व्यवसायी लोगों को खूब लूटने लगे हैं। उपहारों, संदेशों, खाद्यानों और व्यंजनों पर खूब पैसा बहाया जाता है।

लोग पदोन्नति के लोभ में अपने अधिकारियों को प्रसन्न करने के लिए अपनी सामर्थ्य से भी बढ़कर उपहार देते हैं। घरों में बच्चों और स्त्रियों की मानसिकता भी बदल रही है। वे भी ऐसे उत्सवों पर नए वस्त्रों, उपकरणों और वाहनों की माँग करने लगी हैं। जन्मदिनों पर मध्यवर्ग का भरसक शोषण होता है। उत्सवों में बढ़ती जा रही इस अंधाधुंध व्यावसायिकता को हम सब ही रोक सकते हैं। यवावर्ग को इसके लिए आगे आना चाहिए। वे ऐसे उपभोक्तावादी दृष्टिकोण पर नियंत्रण पाएँगे, तो ही उनका भविष्य उज्ज्वल हो पाएगा।

<https://www.essaysinhindi.com/festivals/>

प्रश्न का संदर्भ	
उद्देश्य	
श्रोता	
प्रारूप	
शीर्षक	
प्रस्तावना	
मुख्य भाग	
निष्कर्ष	
समापन	
शब्दावली	
मुहावरे	
संयोजक शब्द	
काल	
वाक्य के प्रकार सरल वाक्य संयुक्त वाक्य मिश्रित वाक्य  अर्थ के आधार पर - विधान वाचक वाक्य प्रश्न वाचक वाक्य संदेह वाचक निषेध वाचक वाक्य विस्मयादि वाचक वाक्य	
	<p>Understood the Prompt:</p> <p>Have I read the prompt or question carefully and understood what is being asked?</p> <ul style="list-style-type: none"> <li>Defined the Purpose: Am I clear on the purpose of the writing task (e.g., to persuade, inform, narrate,</li> </ul>

describe)?

- Brainstormed Ideas: Have I brainstormed and jotted down key points or ideas I want to include in my writing?

#### Structure and Content:

- Introduction:
  - Have I planned an engaging introduction to grab the reader's attention?
  - Do I have a clear thesis statement or main idea?
- Main Body:
  - Have I outlined the main points or arguments I want to make?
  - Are my arguments or points well-supported with evidence or examples?
- Organization:
  - Have I structured my writing with clear paragraphs, each focusing on a single point?
  - Is there a logical flow in the sequence of ideas or events?

#### Language and Style:

- Vocabulary:
  - Have I considered using a variety of vocabulary to make my writing more engaging?
  - Are there any specific words or phrases I want to include?
- Grammar and Sentence Structure:
  - Have I checked for basic grammar and punctuation errors?
  - Are my sentences varied in length and structure to maintain reader interest?

## सशक्त उपकरण

Comparison - तुलना करने के लिए
Evidently - ज़ाहिर है / ज़ाहिर सी बात है Equally - समान रूप से As with - साथ ही Likewise - ठीक वैसे ही In the same way - उसी तरह से Similarly - समान रूप से / एक जैसे Like - जैसे Of contrast - विरोधाभास है कि Conclusion - निष्कर्ष Finally - अंत में On the whole - कुल मिलाकर Summarizing - सारांशित / Despite this - बावजूद इसके In comparison - तुलना करते हुए Even though - चाहे

Cause and effects - कारण और प्रभाव	
<p>Because  Since  For  So  Consequently  Therefore  Thus  Hence  Owing to  As a result of  Causes  As a consequence of  Leads to  Contributes of  Brings about  Results in  Because of this  For this reason  Stems from  Comes from  Results from  Is the result of  Is due to  Is caused by</p>	<p>क्योंकि  तब से  के लिए  इसलिए  फलस्वरूप  इसलिए  इस प्रकार  इस तरह  के कारण  के परिणाम स्वरूप/इसके फलस्वरूप  कारण  के एक परिणाम के रूप में  और जाता है  का योगदान  के बारे में लाता है  का परिणाम  इसके कारण  इस कारण से  मूलशब्द से  सँ आता है  वहां से परिणाम मिले  का परिणाम है  की वजह से है  इस कारण</p>

Additions - विचारमें कुछ जोड़ने के लिए	
<p>And Also In addition Further Furthermore Besides In addition to Moreover Additionally Not only -----but also</p>	<p>और भी इसके अलावा/इसके अतिरिक्त आगे/ इसी दिशा में आगे आगे अलावा निम्न के अलावा इसके अतिरिक्त इसके अतिरिक्त केवल इतना ही नहीं, बल्कि यह भी ना केवल ----- बल्कि /अपितु</p>
<p>Then Again Finally But However Although Unless As long as Except Apart from If</p>	<p>तब दोबारा अंत में लेकिन तथापि/हालाँकि हालाँकि जब तक जब तक कि के अलावा के अलावा अगर/यदि</p>

Illustration - उदाहरण प्रस्तुत करते समय	
For example Such as For instance In the other words As instance As revealed by To show that In the case of As an example For one thing Firstly Secondly	उदाहरण के लिए जैसे कि उदाहरण के लिए दूसरे शब्दों में उदाहरण के लिए जैसा कि प्रकट/प्रस्तुत किया गया है प्रस्तुत करने हेतु के मामले में उदाहरण के लिए/दृष्टांत के लिए एक चीज के लिए पहले तो दूसरे

Opinion - स्वविचार/ स्वमत के लिए	
I think I believe I feel In my opinion In my view As far as I know It seems likely It seems to me In my experience I believe that As for me, I think If I am not mistaken What I mean is I would say that Personally, I think	मुझे लगता है मुझे विश्वास है/ मेरा विश्वास है कि महसूस करता हूँ मेरी राय में/ मेरे मतानुसार / मेरे विचारानुसार मेरे विचार में जहां तक मुझे मालूम है यह संभव लगता है मुझे ऐसा लगता है मेरे अनुभव में मेरा मानना है कि जहाँ तक मेरी बात है, मुझे लगता है यदि मैं गलती नहीं कर रहा हूँ मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं भी ऐसा कहता व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है



--	--

Emphasis - बात पर ज़ोर देने के लिए	
Significantly Notably In particular In fact To be sure Truly Actually In reality As it happens	गौरतलब है कि विशेष रूप से विशेष रूप से वास्तव में/वास्तविकता में देखा जाए तो सुनिश्चित होना सही मायने में वास्तव में यथार्थ में जैसा कि होता है/ अक्सर ऐसा होता है
usually	सामान्यतः / सामान्य रूप से देखा जाए तो / आम तौर पर / सामान्य तौर पर
Logically	तार्किक रूप से

Persuasion - अनुनय / सहमति / प्रेरित करने के लिए	
Of course Clearly Evidently Surely Indeed Undoubtedly Certainly For this reason Besides Again Trust me possibly	बिल्कुल स्पष्ट रूप से ज़रूर निश्चित रूप से वास्तव में निश्चित रूप से निश्चित रूप से इस कारण से के अलावा दोबारा विश्वास कीजिए संभवतः / कदाचित

Conclusion - निष्कर्ष लिखते समय	
To conclude In conclusion Finally On the whole Summarizing Overall To sum up	समाप्त करने के लिए/ समापन के तौर पर निष्कर्ष के तौर पर अंत में/ अंततः कुल मिलाकर सारांश कुल मिलाकर सारांश में



Discuss the positive and negative impacts of tourism on the environment, local economies, and cultural heritage. - anayna

. पर्यावरण:

प्राकृतिक स्थलों का समर्थन: पर्यटन ने कई स्थानों को समृद्धि का अदान-प्रदान किया है, जिससे वहां के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो सकता है। पर्यावरणीय शिक्षा: पर्यटकों को जागरूक करने का माध्यम बन सकता है और उन्हें स्थानीय पर्यावरण की समर्थनीयता का अवलोकन करने में मदद कर सकता है।

2. स्थानीय अर्थव्यवस्था: रोजगार का सृजन: पर्यटन स्थानीय आदिवासी और अन्य समुदायों के लिए नौकरियों की सृष्टि कर सकता है और उनके जीवन को सुधार सकता है। विकास की धारा को बढ़ावा: सही दिशा में पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है और अनुभवशील प्रबंधन से सही रास्ते पर ले सकता है।

3. सांस्कृतिक धरोहर: सांस्कृतिक आदान-प्रदान: पर्यटन से स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर को बचाया और बढ़ावा मिल सकता है, क्योंकि यह लोगों को स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों, उत्सवों और कला के साथ मिलवाता है।

1. पर्यावरण:

प्रदूषण: अत्यधिक पर्यटन से जुड़ी वाहनों, होटलों और अन्य आधुनिक साधनों का उपयोग पर्यावरणीय समस्याएं बढ़ा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग: बड़े पर्यटन दृष्टिकोण से विकसित क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग हो सकता है जिससे उनकी कमी हो सकती है।

2. स्थानीय अर्थव्यवस्था: सामाजिक समस्याएं: पर्यटन से आते बड़े आंगनबाद, सामाजिक समस्याएं, और सामाजिक विभेदों की बढ़ सकती हैं। मूल्यों की हानि: अक्सर पर्यटन से आने वाले विदेशी प्रभावों के कारण स्थानीय समुदायों की मूल्यों में कमी हो सकती है।

3. सांस्कृतिक धरोहर: अनुकरण और परिवर्तन: अधिक पर्यटकों के कारण, स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर में अनुकरण और परिवर्तन हो सकता है, जिससे वह अपनी असलीता खो सकता है। इन सभी प्रभावों को मध्यस्थ स्थिति से देखा जा सकता है, और सही प्रबंधन और उचित संरचना के साथ पर्यटन को सकारात्मक रूप में संरचित किया जा सकता है।

Research and identify whether each destination promotes eco-friendly tourism practices.

They can use online resources or provided information sheets. - (३ places)

नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, लक्षद्वीप द्वीप समूह, और उत्तराखंड में कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान जैसे स्थान पर्यटकों के लिए पर्यावरणकूल घूमने के अवसर प्रकट करते हैं।

Students share their findings with the class, emphasising the eco-friendly features of each destination.

Each group presents their eco-friendly itinerary to the class, explaining the rationale behind their choices. –

५) Discuss the role of travellers in promoting sustainability and responsible tourism. How the travel choices made by tourists can impact the environment and communities in each destination.

(Avni)

पर्यटक होने के नाते, आप की प्रथम ज़िम्मेदारी होती है पर्यटक स्थल पर पर्यावरण का ध्यान रखना। अगर आप किसी नए स्थान यात्रा करने जा रहे हो, तो आपका कर्तव्य है की उस स्थान की जीवित आबादी के साथ छेड़ छाड़ न करे। मूल रूप से, पर्यावरणनुकूल पर्यटन स्थान पर मौजूद मूल संस्कृतियों, वन्य जीव, और आबादी, का दोहन किए बिना यात्रा होती है।

तमिल नाडू जैसे कई राष्ट्र अपनी अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन पर निर्भर रहती है। हमारी दुनिया ने हमें ऐसे मनोरम एवं प्राकृतिक नज़ारों का वरदान दिया है जिसे देख कर हमारी आँखें फटी रह जाती हैं, और ऐसे आश्चर्यचकित दृश्य के सामने भी हम हमारी बुरी आदतों को छोड़ने को तैयार नहीं रहते — कूड़ा उद्यान में फेकने और गंदगी फैलाने की

आदत, आलसपन के करन गाड़ी के अथवा पैदल न जाने की आदत, सतत ऊर्जा के स्रोत न इस्तेमाल करने और कमरे से निकलते हुए बल्ब न बंद करने की आदत।

ऐसे छोटे छोटे कार्यों से ही हमारी दुनिया बदल रही है। ऐसे छोटे छोटे कार्यों की वजह से आज हमारे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। ऐसे छोटे छोटे कार्यों की वजह से आज हमारे जलवायु में परिवर्तन हो रहा है।

जिस तरह से बूँद बूँद से सागर बनता है, वैसे ही ऐसे छोटे कार्यों में बदलाव लाने से हमारी दुनिया बदल सकती है।

Encourage students to share their insights and ideas for making eco-friendly choices during their future travels.

Discuss the positive and negative impacts of tourism on the environment, local economies, and cultural heritage. - anayna

. पर्यावरण:

प्राकृतिक स्थलों का समर्थन: पर्यटन ने कई स्थानों को समृद्धि का अदान-प्रदान किया है, जिससे वहां के प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो सकता है। पर्यावरणीय शिक्षा: पर्यटकों को जागरूक करने का माध्यम बन सकता है और उन्हें स्थानीय पर्यावरण की समर्थनीयता का अवलोकन करने में मदद कर सकता है।

2. स्थानीय अर्थव्यवस्था: रोजगार का सृजन: पर्यटन स्थानीय आदिवासी और अन्य समुदायों के लिए नौकरियों की सृष्टि कर सकता है और उनके जीवन को सुधार सकता है। विकास की धारा को बढ़ावा: सही दिशा में पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है और अनुभवशील प्रबंधन से सही रास्ते पर ले सकता है।

3. सांस्कृतिक धरोहर: सांस्कृतिक आदान-प्रदान: पर्यटन से स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर को बचाया और बढ़ावा मिल सकता है, क्योंकि यह लोगों को स्थानीय ऐतिहासिक स्थलों, उत्सवों और कला के साथ मिलवाता है।

1. पर्यावरण:

प्रदूषण: अत्यधिक पर्यटन से जुड़ी वाहनों, होटलों और अन्य आधुनिक साधनों का उपयोग पर्यावरणीय समस्याएं बढ़ा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग: बड़े पर्यटन दृष्टिकोण से विकसित क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग हो सकता है जिससे उनकी कमी हो सकती है।

2. स्थानीय अर्थव्यवस्था: सामाजिक समस्याएं: पर्यटन से आते बड़े आंगनबाद, सामाजिक समस्याएं, और सामाजिक विभेदों की बढ़ सकती हैं। मूल्यों की हानि: अक्सर पर्यटन से आने वाले विदेशी प्रभावों के कारण स्थानीय समुदायों की मूल्यों में कमी हो सकती है।

3. सांस्कृतिक धरोहर: अनुकरण और परिवर्तन: अधिक पर्यटकों के कारण, स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर में अनुकरण और परिवर्तन हो सकता है, जिससे वह अपनी असलीता खो सकता है। इन सभी प्रभावों को मध्यस्थ स्थिति से देखा जा सकता है, और सही प्रबंधन और उचित संरचना के साथ पर्यटन को सकारात्मक रूप में संरचित किया जा सकता है।

Research and identify whether each destination promotes eco-friendly tourism practices.

They can use online resources or provided information sheets. - (३ places)

नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, लक्षद्वीप द्वीप समूह, और उत्तराखंड में कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान जैसे स्थान पर्यटकों के लिए पर्यावरणकूल घूमने के अवसर प्रकट करते हैं।

Students share their findings with the class, emphasising the eco-friendly features of each destination.

Each group presents their eco-friendly itinerary to the class, explaining the rationale behind their choices. –

५) Discuss the role of travellers in promoting sustainability and responsible tourism. How the travel choices made by tourists can impact the environment and communities in each destination.

(Avni)

पर्यटक होने के नाते, आप की प्रथम ज़िम्मेदारी होती है पर्यटक स्थल पर पर्यावरण का ध्यान रखना। अगर आप किसी नए स्थान यात्रा करने जा रहे हो, तो आपका कर्तव्य है की उस स्थान की जीवित आबादी के साथ छेड़ छाड़ न करे। मूल रूप से, पर्यावरणनुकूल पर्यटन स्थान पर मौजूद मूल संस्कृतियों, वन्य जीव, और आबादी, का दोहन किए बिना यात्रा होती है।

तमिल नाडू जैसे कई राष्ट्र अपनी अर्थव्यवस्था के लिए पर्यटन पर निर्भर रहती है। हमारी दुनिया ने हमें ऐसे मनोरम एवं प्राकृतिक नज़ारों का वरदान दिया है जिसे देख कर हमारी आँखें फटी रह जाती हैं, और ऐसे आश्चर्यचकित दृश्य के सामने भी हम हमारी बुरी आदतों को छोड़ने को तैयार नहीं रहते — कूड़ा उद्यान में फेकने और गंदगी फैलाने की



आदत, आलसपन के करन गाड़ी के अथवा पैदल न जाने की आदत, सतत ऊर्जा के स्रोत न इस्तेमाल करने और कमरे से निकलते हुए बल्ब न बंद करने की आदत।

ऐसे छोटे छोटे कार्यों से ही हमारी दुनिया बदल रही है। ऐसे छोटे छोटे कार्यों की वजह से आज हमारे वैश्विक तापमान में वृद्धि होती है। ऐसे छोटे छोटे कार्यों की वजह से आज हमारे जलवायु में परिवर्तन हो रहा है।

जिस तरह से बूँद बूँद से सागर बनता है, वैसे ही ऐसे छोटे कार्यों में बदलाव लाने से हमारी दुनिया बदल सकती है।

Encourage students to share their insights and ideas for making eco-friendly choices during their future travels.

प्रस्तावना:

त्योहारों का मानव जीवन में विशेष महत्व है। ये समृद्धि, सामाजिक सद्भावना, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और खुशियों का स्रोत होते हैं। हमारे भारतीय संस्कृति में त्योहारों को बड़ा महत्व दिया जाता है और ये हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं।

त्योहारों का महत्व:

सामाजिक एकता का स्रोत: त्योहार समाज में एकता और सद्भावना को बढ़ावा देते हैं। वे सभी व्यक्तियों को एक साथ मिलकर मनाने का मौका प्रदान करते हैं, जिनसे लोग अपने परिवार, दोस्तों और समाज के सदस्यों के साथ समय बिता सकते हैं।

सांस्कृतिक धरोहर का प्रदर्शन: त्योहार हमारी सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। वे हमें हमारी धरोहर, परंपराओं और आदिकाल की जीवनशैली को याद दिलाते हैं और इसे आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करते हैं।

आत्मरंजन और मनोरंजन का स्रोत: त्योहार व्यक्तिगत आत्मरंजन और मनोरंजन का माध्यम होते हैं। वे लोगों को अपने दिनचर्या के साथ साथ थोड़ी रिलैक्सेशन का समय भी देते हैं, जिससे उनकी मानसिक तनाव कम होता है।

अर्थनीति को बढ़ावा: बड़े पैमाने पर त्योहारों का आयोजन आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा प्रदान करता है। व्यापारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो त्योहार विभिन्न उत्पादों की डिमांड को बढ़ाते हैं और ऐसे समय में व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।

धार्मिक महत्व: धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो त्योहारों का अत्यधिक महत्व होता है। वे लोगों को उनके आध्यात्मिक मूलों की याद दिलाते हैं और उन्हें धार्मिक तत्वों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

बच्चों के विकास में महत्वपूर्ण: त्योहारों का बच्चों के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। वे न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि शैली, कला, संगीत आदि के क्षेत्र में भी बच्चों की प्रतिभा को विकसित करने का मौका प्रदान करते हैं।

हमारे समय में, त्योहारों में रुचि कम हो रही है यह एक गंभीर विचार का विषय है। आधुनिकता, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव जीवन को नए दिशानिर्देश दिए हैं।

आजकल के लोग ज्यादातर अपने करियर और पेशेवर जीवन में व्यस्त होने के कारण त्योहारों के प्रति अपनी रुचि खो रहे हैं। यहाँ तक कि कई लोग त्योहारों को बस एक आवकाश या छुट्टी के रूप में देखते हैं और उन्हें आपसी मिलनसर और अपने प्रियजनों के साथ गुजारा करने का माध्यम मानते हैं।

व्यस्त जीवनशैली, आधुनिक विशेषज्ञता की मांग और समय की कमी के कारण लोग त्योहारों के आयोजन और उनके पारंपरिक महत्व को उपेक्षित करने लगे हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी ज्यादातर आधुनिक विशेषज्ञता, सोशल मीडिया, और अन्य मनोरंजन स्रोतों के प्रति आकर्षित हो रही है और त्योहारों के परंपरागत आयोजनों में कम रुचि दिखा रही है।

विचारशीलता और मानवीय संवाद की कमी भी त्योहारों की रुचि में कमी का कारण हो सकती है। आजकल के लोग ज्यादातर अपने स्मार्टफोन और इंटरनेट के साथ जुड़े रहते हैं और इसके कारण वे अपने परिवार और सामाजिक संबंधों से दूर हो जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, वे त्योहारों में भाग लेने के अवसरों को हाथ से जाने देते हैं और उनकी रुचि धीरे-धीरे कम होती जा रही है।

**निष्कर्ष:** इस प्रकार, त्योहारों का महत्व हमारे जीवन में अत्यधिक होता है। वे सामाजिक एकता, सांस्कृतिक धरोहर, आत्मरंजन, अर्थनीति और धार्मिकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। हमें इन त्योहारों का समय समय पर उत्सव और आनंद के साथ मनाने की आदत बनानी चाहिए ताकि हम अपने जीवन को खुशियों से भर सकें।

## त्योहारों का बदलता रूप

त्योहार भारतीय संस्कृति की पहचान के साथ-साथ हमारी आन-बान व शान भी है, जिसके माध्यम से परम्पराओं व धार्मिक आस्थाओं का प्रतीकात्मक ज्ञान भी प्राप्त होता है। आपसी सहभागिता, परस्पर-प्रेम, रिश्तों की प्रगाढ़ता, जीवनमूल्यों की सीख, नवस्फूर्ति, उमंग-उल्लास का संचार ही त्योहारों की सौगात होती है। हमारे देश में मनाए जाने वाले त्योहारों में 15 अगस्त-स्वतन्त्रता दिवस, 26 जनवरी-गणतन्त्र दिवस, दो अक्टूबर-राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म आदि राष्ट्रीय त्योहार हैं, जो राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित कर, सम्पूर्ण राष्ट्र को राष्ट्रप्रेम के धागे में पिरोने का कार्य करते हैं। वहीं दीवाली, दशहरा, ईद, होली, क्रिसमस, भाईदूज आदि अंगणित धार्मिक त्योहारों की श्रृंखला धार्मिक मान्यताओं, नैतिक मूल्यों, रीति-रिवाजों व परम्पराओं का ज्ञान कराती हैं। मानव समाज के अंतर्गत आत्मिक शक्ति का संचार करती हैं। सभी त्योहार सत्य की असत्य पर विजय, प्रकाश द्वारा अंधकार का विनाश, त्याग व संयम, विश्वास, सौहार्दता, सहिष्णुता की सीख देते हैं। भूमंडलीकरण व वैश्विक संस्कृति के प्रभाव में शिक्षा के प्रचार-प्रसार, वैज्ञानिक व तकनीकी विकास तथा मीडिया के कारण त्योहारों में परिवर्तन आए हैं।

हमारे देश की पारिवारिक संरचना की नींव 'संयुक्त परिवार की परंपरा' अब छिन्न-भिन्न हो गई है। समय की परिवर्तनशीलता के आधार पर पलायन की मार व मंहगाई ने त्योहारों के स्वरूप को पारिवारिक धरातल पर पूरी तरह से बदल दिया है। संयुक्त परिवार की कई पीढ़ियाँ जहाँ एक साथ मिलकर रहती थी और लोगों का सुखमय जीवनयापन होता रहा और त्योहार परिवार में एक बड़े उत्सव के रूप में मनाए जाते थे। सब मिलकर घर सजाते, रंगोली बनाते, शुद्ध देशी घी में स्वादिष्ट सेहत भरे पकवानों की खुशबू से घर महक उठता, घर में कीर्तन, आरती, भजन की गूंज वातावरण को सकरतमकता से भर देती। बड़ों का सम्मान करना, उनका आशीर्वाद लेना आज आधुनिक परिवेश की इस चकाचौंध भरी दुनिया में विलुप्त सा हो गया है।

पारिवारिक विघटन से रिश्तों को आघात पहुँचने के कारण व्यक्ति आत्मकेंद्रित होता जा रहा है। दिवाली के अवसर पर जहाँ घर दीयों की रोशनी व रंगीन कागज की सजावट से सजता था और दहलीज़ पर रंगोली के बीच दिए जलते थे। आज कहीं दूर तक भी यह सब छटा दिखाई नहीं देती। दीए, सजावट, लाइटें, रंगोली, शुभ-लाभ, शुभ-दीपावली सब कुछ बाज़ार में तैयार मिलता है। उनमें से अधिकांशतः चीन देश द्वारा निर्मित होते हैं, जिसके कारण हमारे शिल्पकारों, कुटीर उद्योगों व दस्तकारों की रोजी-रोटी तक छिन गई है और चीन के उत्पादों की बाज़ार में भरमार होने के कारण वास्तविकता यह परिलक्षित होती है कि दिवाली हमारी नहीं बल्कि चीन की होती है। हमारे हर त्योहार पर उनके लिए यह कहावत पूरी तरह से चरितार्थ होती है- चीन की पाँचों उँगलियाँ घी में तथा सिर कढ़ाई में होता है।

अब अगर होली की बात की जाए तो यह त्योहार हमारे देश में रंगों की छटा बिखेर कर सम्पूर्ण देश को खुशियों के रंग में डुबो देता है। मंदिर सजे होने के कारण वहाँ का परिदृश्य बड़ा ही आकर्षक होता है और भक्ति रस में भीगे राधा-कृष्ण के भजन की मीठी तान सुनाई देती है। भक्ति में आनंदित भक्त नृत्य करते दृष्टिगोचर होते हैं। बरसाने की लट्ठमार होली, वृंदावन की लड्डू व फूलों की होली, राजस्थान की माली होली, डोलची होली में जनसमूह रंगों में पूरी तरह से सराबोर हो जाता है। साथ ही "सखी री मनभावन फागुन आयौ, मैं तो खेलूँगी श्याम संग फाग, ब्रज के लोकगायन से पूरा ब्रज, राजस्थान का कण-कण गुंजायमान हो उठता है।

किन्तु महानगरों में यह दृश्य दिखाई नहीं देता। यहाँ होती है अंडा मार होली, थैली में पानी भर-मार होली। होली के रंग हैं लाल, पीला, हरा। परन्तु यहाँ पर दिखाई देते हैं, कृत्रिम रंग नीला, जामुनी, काला-ग्रीस, , अश्लील गाने व नृत्य और लोग अब भक्ति रस में नहीं, मदिरापान की मस्ती में डूब रहे हैं। इस प्रकार से आज त्योहारों को मनाने में विकृतियाँ आ गई हैं। त्योहार जिनका संबंध हमारे पर्यावरण से भी है पर आज त्योहारों के कारण ध्वनि व वायु प्रदूषण बढ़ता है।

इसके अतिरिक्त यदि हम गणपति उत्सव को देखें तो पूरा महाराष्ट्र भक्ति रस में डूबा रहता है। चारों ओर गणपति के जयजयकार के साथ उनकी पूजा-अर्चना, आरती-वंदना के दृश्य दिखाई देते हैं। पर गणपति-विसर्जन के दिन ढोल-नगाड़ों व ताशों के कारण ध्वनि प्रदूषण से कान के परदे फटने लगते हैं। अगले दिन समुद्र तट पर विखंडित गणपति की मूर्तियाँ दिखाई देती हैं। इसलिए आवश्यकता है कि त्योहारों को मनाते समय पर्यावरण को नुकसान न पहुँचाएँ।

भूमंडलीकरण के प्रभाव से त्योहार भी अछूते नहीं हैं। आज क्षेत्रीय त्योहार भी संपूर्ण भारत में मनाए जाते हैं। पलायन के कारण भाषा, बोली, खानपान, वेशभूषा, गीत-संगीत सभी का मिलन हो रहा है। बिहार राज्य की छठ पूजा जो धन-धान्य, पति, पुत्र, तथा सुख-समृद्धि की कामना के लिए होता है। इस त्योहार की धूम बिहार से लेकर मुंबई तक समुद्र के तट पर भी भक्ति के रूप में देखी जा सकती है। भक्तों की अपार भीड़ टोकरी में ठेकुआ, खजूर, नारियल, मूली, सुथनी, अखरोट, बादाम आदि सजाकर एक बड़ा घड़ा (कुंभ) जिस पर दीपक प्रज्ज्वलित होता है। आस्था के भावों में डूबे भक्त सूर्य को अर्घ्य (जल) चढ़ाते हैं।

बैसाखी की धूम पंजाब में अपने पूरे यौवन के साथ, एक अद्भुत जोश भरे परिवेश में सम्पूर्ण समाज को आकर्षित करती है। गुरुद्वारों में आखण्ड पाठ, रोशनी की सजावट का दृश्य अद्भुत होता है। मैलों की धूम देखने लायक होती है। भारत में हर दिन एक पर्व है। अगर आप मंदिरों में सूचनापट देखें तो प्रथम, द्वितीय, षष्ठी, अमावस्या, पूर्णिमा सभी दिवसों का विवरण होता है। जिससे हर व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार जानकारी हासिल कर लेता है। त्योहार समाज के उत्थान, आपसी रिश्तों में प्रगाढ़ता व सत्कर्म की सीख देते हैं। यह सामाजिक ताने-बाने की सूट्ट नींव है। वैश्वीकरण ने भारतीय त्योहारों की अनोखी छटा को विदेशों में भी बिखेरा है। प्रवासी भारतीय सभी पर्वों को वहाँ के मूल निवासियों के साथ मनाते हैं और भारत भूमि को नमन करते हैं। विदेशी त्योहार हेलोवीन डे, मदर डे, फादर डे, गुलाब डे, भारत में युवा व किशोर बड़े उत्साह से मनाते हैं, जबकि भारतीय संस्कृति में माता-पिता देवतुल्य हैं और बहन-भाई का रिश्ता अटूट है।

आज त्योहारों को मनाने के तरीकों में परिवर्तन आ गया है। आरती यू ट्यूब पर बजती है तथा त्योहारों की उमंग को भोजनालय में जाकर खाना खाने के साथ मनाया जाता है। अब रसोईघरों से व्यंजनों की सुगंध नहीं आती। व्हाट्स अप से अपने संदेशों को संवेदना

शून्य बनाकर शुभकामनाओं के रूप में भेजकर अपनों को एहसास करने का प्रयास कराते हैं। आज त्योहारों ने आस्था के स्थान पर मस्ती का रूप ले लिया है।

साथ ही साथ सोशल मीडिया ने घर पर दुर्लभ दर्शनों को आसान बना दिया है। फिल्मों व धारावाहिकों में त्योहारों को पूर्णतया मस्ती व आडंबर का रूप दे दिया है। त्योहारों पर प्रीति भोज व्यापारिक हो गए हैं और हमारे सांस्कारिक मूल्यों का कहीं न कहीं हास हो रहा है। इसलिए आज हमें त्योहारों को भक्ति ,आस्था ,जीवन-मूल्यों ,रिश्तों के प्रति सम्मान व नैतिकता से जोड़ना होगा। बच्चों में मानवीय गुणों के बीज बोने होंगे। त्योहारों के वास्तविक अर्थ को जानना होगा तभी हम अपनी अमूल्य धरोहर की रक्षा कर पाएँगे।

लेखिका:- रीटा गोवर